



श्रीगणेशायनमः॥ अथ हनुमानपूजापद्धतिरित्युक्तम्॥ ॥ न
 वायोऽन्तराधनं॥ ॐ समुद्रादकं दूफट्॥ ३॥ ॥ विनाचमनं
 ॐ क्रौञ्चोत्तराधनं॥ ॐ क्रौञ्चोत्तराधनं॥ ॐ क्रौञ्चोत्तराधनं॥ ॐ क्रौञ्चोत्तराधनं॥
 यथाहा॥ ॥ सामान्यार्घ्यपात्रापादनं॥ ॐ आधानमक्यादित्या२॥
 पूजा॥ रुट्॥ मंचीमल॥ नमः लेखना॥ अंकुशमूला॥ ॐ क्रौञ्चोत्तराधनं॥
 कमूनचरि॥ ॥ ॐ वन्दनाक्षतम्॥ ॐ वन्दनाक्षतम्॥ ॐ वन्दनाक्षतम्॥ ॐ वन्दनाक्षतम्॥

लक्ष्म्यदिग्बन्धनं॥ रुट्॥ ॥ ततोऽनपूजा॥ अर्घ्यउत्तराधनं॥
 रुट्॥ पूजा॥ ॐ विद्यायनमः॥ दक्षिण॥ ॐ महालक्ष्मी२॥ वाम
 ॥ ॐ सनस्वये२॥ ॥ पुनर्दक्षपूजा॥ ॐ विद्याय२॥ ॐ गंगाय२॥
 ॐ कमूनार्थ२॥ वाम॥ ॐ दक्षपालाय२॥ ॐ गंगाय२॥ ॐ विद्याय२॥
 ॐ कमूनार्थ२॥ ॥ पुनर्दक्ष॥ ॐ दक्ष२॥ वाम॥ ॐ विद्याय२॥ ॥ द

तथा जूनि प्राकान्नाथ वक्षस्व लेखनशायक ॥ उं नमो एगवमसु
दर्शनाय दूयुट्स्वाहा ॥ ॥ **प्राध्यायामा** ॥ यं ३२ दुकाया ॥ नं ६४
पूनायाय ॥ वं १६ पिकाया ॥ ॥ **तमो हगुडि** ॥ मूला धानस
वा ६ सहस्रदलकमलसमिव भक्ति स्थापनायाय ॥ हंसः संकु
६ ॥ **वामकुडि** पापपूनुषचिन्तायाय ॥ **वामकुडि** नि ॥ ॥

अथवा ॥ ददकुडि स्थितं दृष्टुं मंगुष्टपनिमानकं ॥ विप्रहत्या
शिरोयुक्तं कनकस्तयवाङ्कं ॥ मदिनापानद्वयं गुणकलकेटी
द्वयं ॥ **पापिसंश्रय** पदद्वयं पपाटकनीमकं ॥ स्वप्नचर्मधनं
दुष्टमध्यायकं सुदुर्लभं ॥ ॥ यं ३२ पूननं ॥ नं ६४ कुर्यात् ॥
वं १६ नवय ॥ ॥ **उषक्** माक्रमप्राणाया संकानयित्वाः पापपूनु

नूमान्दवताये॥ हृदि॥ ॐ ह्रीं वीजय॥ गुरु॥ ॐ ह्रीं शक्तयः
पादो॥ सर्वगु सर्वदा सर्वसिद्धय विनिथागः॥ कृतां उ॥ लिः॥ ॥
मूलकनभंगन्यासः॥ ॐ ह्रीं अस्माय रुद्र॥ ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठायां
नमः॥ ॐ ह्रीं नर्तनीयां स्वाहा॥ ॐ ह्रीं मध्यमायां वषट्॥ ॐ ह्रीं
अनामिकायां हुँ॥ ॐ ह्रीं कनिष्ठायां वौषट्॥ ॐ ह्रीं क

लग्ने पृष्ठायां अस्माय रुद्र॥ ३॥ एवं हृदयादि॥ ६॥ ॥ नतीमा
रुकां न्यासः॥ ॐ ह्रीं अस्मै मारुकां न्यासस्य॥ कृतां उ॥ लिः॥ ॐ प्रज
पति ऋषयः॥ शिव॥ ॐ गायत्री चन्दसः॥ मुख॥ ॐ सनस्वः
तीमारुकादवताये॥ हृदि॥ ॐ ह्रीं वीजय॥ गुरु॥ ॐ
ध्वनयः शक्तयः॥ पादो॥ ॐ ह्रीं अवक कीलकाय॥ सर्वो रग॥

ॐ ममदहदुद्यार्थ उपविनीयागः॥ कृता पूरतिः॥ ॥ गंगा क
ना जन्मासः॥ ॐ अं कं उं आं अं कुं ङां २॥ ॐ वं उं ङीं नं कुं
नीयां ११॥ ॐ उं टं ङं मं अं मायां वषट्॥ ॐ नं उं नं अं नो मि
कायां ङं॥ ॐ उं पं उं कं निष्ठायां वो षट्॥ ॐ अं यं नं लं वं ङं
षं संहं लं ङं अः कन गल पृष्ठायां अष्टाय रुट्॥ ३॥ नं वं दद

यादि॥ ॥ गंगा ध्यानां॥ ॐ पञ्चशठद्वर्हं न चितां गरागी चृते न्युः
खं दं कुं मूदा वदातां॥ वना रथ पृष्ठ कम दसृगं र उ गिनं सं द
धतां गिनतां॥ धूमि ध्यानाय धून का वन्या सया य॥ ॐ अं २॥
कपाल॥ ॐ अं २॥ खाल॥ ॐ ङं २॥ उवमिखा॥ ॐ ङीं २॥ ख
वमिखा॥ ॐ उं २॥ उवकूपन॥ ॐ उं २॥ खवकूपन॥ ॐ अं २॥

उवक्रासघाल॥ॐ ऊँ२॥खवक्रासघाल॥ॐ ईँ२॥उवहाताल॥
ॐ ईँ२॥खवहाताल॥ॐ नूँ२॥थंथून्नुसि॥ॐ नूँ२॥कोथून्नु
सि॥ॐ उँ२॥थंथूवा॥ॐ उँ२॥कोथूवा॥ॐ अँ२॥मादस॥
ॐ अँ२॥मिधास॥ ॥ॐ कैँ२॥उववाहा॥ॐ खैँ२॥उववृत्ता
॥ॐ गैँ२॥उवकावला॥ॐ छैँ२॥उवपविदहा॥ॐ टैँ२॥उव

विंवा॥ॐ वँ२॥खववाहा॥ॐ कँ२॥खववृत्ता॥ॐ उँ२॥खवकावला
॥ॐ जँ२॥खवपविदहा॥ॐ ञँ२॥खवपविदवाका॥ॐ टँ२॥उ
वकनचूकन॥ॐ षँ२॥उवपुलि॥ॐ ठँ२॥उवगुंरि॥ॐ डँ२॥उ
वगुंरिपविदहा॥ॐ ढँ२॥उवगुंरिपविदवाका॥ॐ गँ२॥ख
वकलचूकल॥ॐ थँ२॥खवपुलि॥ॐ दँ२॥खवगुंरि॥ॐ धँ२

खववुनिप्रविडहा॥ॐ नै२॥खववुनिप्रविडवाका॥ॐ पै२॥उव
वका॥ॐ रै२॥खववका॥ॐ वै२॥उतधू॥ॐ ऐ२॥यकु॥
ॐ मै२॥घाथ॥ॐ ऐत्वमत्सर्न२॥नुगत॥ॐ वैभूत्तमत्सर्न
२॥उवहसूनी॥ॐ लैमोसात्सर्न२॥ववुनि॥ॐ वैवदात्सर्न२
॥खवसूनी॥ॐ हँभूत्तमत्सर्न२॥नुगतनिस्पुउवलाहात

पविडत्वं॥ॐ पैमक्रात्सर्न२॥नुगतनिस्पुखवलाहातपवि
डवात्वं॥ॐ सँक्षुक्तात्सर्न२॥नुगतनिस्पुउववुनिप्रविडत्वं॥
ॐ हँप्राष्टात्सर्न२॥नुगतनिस्पुखववुनिप्रविडत्वं॥ॐ लैद
जीवात्सर्न२॥नुगतनिस्पुयकुत्वं॥ॐ कँपनमात्सर्न२॥नुगत
निस्पुयकुत्वं॥ॐ तिमारुकोन्यासः॥ ॥तगाथीक००मारुका

न्यासः॥ अस्मिन्नीकस्य मातृकान्यासस्य॥ वक्ष्यामि॥ ॐ ह्रीं दक्षि
र॥ मूर्तिं कृष्य॥ मूर्तिं॥ ॐ गं यमी कृन्तस्य॥ मुख॥ ॐ ह्रीं
अर्द्धादि जाहनादवगाय॥ दक्ष्य॥ ॐ ह्रीं वीजाय॥ गुह्य
ॐ स्वनामकस्य॥ पादौ॥ सर्वसिद्धय उष विनिर्वाहः॥ ॥
कौमिद्यादिषट्पदी ध्यानन्यासः॥ ॥ नमो न्यासः॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं
कक्षेष्टपूरुषोदनीया॥ ललाट॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं ॐ नन विन उया

र्या॥ रक्षासः॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं सूर्यस्य सात्मनीया॥ उवमिरवा॥ ॐ
ह्रीं ॐ ह्रीं निमूर्ति कक्षालादिया॥ खवमिरवा॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं अमनस्य
रुलादिया॥ उवक्रसपन॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं अर्धमिदीर्घघाटाया॥
खवक्रसपन॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं रात्रगीर्धमुरवीया॥ उवक्रासव
न॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं निमिर्गमसुरवीया॥ खवक्रासवना॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं कान्चीमयी
र्धमिदीया॥ उवक्रनाल॥ ॐ ह्रीं ॐ ह्रीं हनसकन्दोदनीया॥ खवक्रना

ला॥ॐ ह्रीं हननकृन्दादरीयां॥३॥खवकृन्दा॥ॐ ह्रीं मिनीठउ
हुंकीयीयां॥२॥थंथुनसि॥ॐ ह्रीं नैलिकठविहृतमरुवीयां॥२॥वा
थुनथुसि॥ॐ ह्रीं उं सयठका लामरुवीयां॥२॥थंथुवा॥ॐ ह्रीं उं अन
ग्रहठका लामरुवीयां॥२॥वाथुवा॥ॐ ह्रीं उं अवनठगीमरुवीयां॥२॥
मादस॥ॐ ह्रीं उं मा हासनठविशामरुवीयां॥२॥मिवासा॥ॐ ह्रीं
कंक्राधीमहाकीयां॥२॥उववाह॥ॐ ह्रीं खं वरदुषासनस्वमीयां॥२॥

उववृत्ता॥ॐ ह्रीं गं पञ्चनकठसर्वसिद्धिगेनीयां॥२॥उववाचला॥ॐ
ह्रीं धं मिवाकृमठगैलाकविश्यायां॥२॥उवपविठहा॥ॐ ह्रीं हं
कनूडठमनुठकियां॥२॥उवपविठवाका॥ॐ ह्रीं वं कृमठआत्म
ठकियां॥२॥खववाह॥ॐ ह्रीं हं नकुठदगमायां॥२॥खववृ
त्ता॥ॐ ह्रीं उं वतुनाननठलंवादनीयां॥२॥खववाचला॥ॐ ह्रीं
मं अउठजाविहीयां॥२॥खवपविठहा॥ॐ ह्रीं उं सर्वठनागनी

ॐ सर्वे वेदात्मनः खशी भवान्दीयां ॥ खवहसनी ॥ ॐ ह्रीं ॐ अद्यात्म
 नवकषायदीयां ॥ नुगलं निस्पंदवलाहानपविंदत्वं ॥ ॐ ह्रीं
 पंमकुत्समनः खगलनद्विदो निदीयां ॥ नुगलं निस्पंदवलाह
 नपविंदत्वं ॥ ॐ ह्रीं संकुत्समनः खगलनद्विदो निदीयां ॥ नुगलं
 निस्पंदवलाहानपविंदत्वं ॥ ॐ ह्रीं प्रध्मात्मनः लकुली लकीयां
 नमः ॥ नुगलं निस्पंदवलाहानपविंदत्वं ॥ ॐ ह्रीं लकीवात्मनः

वषा व्यापिनीयां ॥ नुगलं निस्पंदवलाहानपविंदत्वं ॥ ॐ ह्रीं जनमात्मनः संव
 र्मकषा महासायायां ॥ नुगलं निस्पंदवलाहानपविंदत्वं ॥ ॐ तिथीकषायाः
 गकान्यासः ॥ ॥ गतामूलन्यासः ॥ ॥ पूर्ववत्सूलन्यासः ॥ ॥ मू
 लकनपञ्चगन्यासः ॥ ॥ गतामूलवर्धन्यासः ॥ ॐ ह्रीं ॥ मूर्द्धि ॥ ॐ
 ह्रीं ॥ गता ॥ ॐ ह्रीं ॥ चद्र ॥ ॐ ह्रीं ॥ मूर्द्धि ॥ ॐ ह्रीं ॥ कर्षा
 ॐ ह्रीं ॥ वा ॥ ॐ ह्रीं ॥ दद्या ॥ ॐ ह्रीं ॥ दद्या ॥ ॐ नृ ॥ ॐ ह्रीं ॥

ॐ मंत्रानां लिङ्गं ॥ ॐ नैऋतं ॥ जानुद्वयं ॥ ॐ मंत्रं ॥ पादद्वयं
 ॥ ॐ हों कुं हनुमभनमः ॥ मृदि ॥ ॐ खुं कुं हनुमभनः ॥ रात्रि ॥ ॐ
 कुं कुं हनुमभनः ॥ मृत् ॥ ॐ हों कुं हनुमभनः ॥ वदि ॥
 ॐ ॐ खुं कुं हनुमभनः ॥ नारी ॥ ॐ कुं कुं हनुमभनः
 उद्वयं ॥ ॐ हों कुं कुं कुं कुं कुं ॥ ॐ चद्वयं ॥
 ॐ हनुमभनः ॥ पादद्वयं ॥ पदं न्यासः ॥ गता

विलम्बन्यासः ॥ ॐ अस्मिन् प्रयाग्नमनुस्मनामवन्तुः ॥ गायत्री
 कन्दः कपिष्ठनादवगाभूरिष्टसिद्धयुक्पविनिर्थागः ॥ ॥ न्या
 सः ॥ ॐ कुं हनुमभनं गुणायोः ॥ ॐ खुं नामद्वयगतर्जनीयोः ॥
 ॥ ॐ कुं लक्ष्मणप्रानदागमधमा ॥ ॐ वषट् ॥ ॐ कुं अ
 ननासुताय अनामिकाभ्यां ॥ ॐ कुं श्रीगणेशाय कविनामय ॥ क
 निष्ठायां वषट् ॥ ॐ कुं खुं कुं कुं कुं लंकाप्रासादं कनायहन

मन्त्राय कनकलपुष्पाय ॥ अम्भाय रुद्राय ॥ नवं हृदयादि ॥ ॥ वि
 भुवदवन्नासश्वासिया ॥ ॐ अस्मिन्नेष्टुव अस्तु नय अस्तु दक्षा कनमस्तु
 स्म ॥ ॐ ह्यनकप्रिः अस्तुष्टु पुन्यः श्री हनुमान्दवता हवी ॐ स्वाहा ॥ कि
 : सर्वसिद्धय उपविनीयागः ॥ ॥ न्यासः ॥ ॐ अस्तु नयाय अस्तु ॥
 ॐ नृदमूर्त्यः नृद ॥ ॐ वायुपूत्राय मध्य ॥ ॐ अग्निगर्वाय अ
 ना ॥ ॐ नामदूतायः वनि ॥ ॐ बुक्तामुनिवानक्षयः कनकल ॥ ॥

[illegible]

५३

तसागनाय॥ ॐ नलदीपाय॥ ॐ प्रसादाय॥ ॐ हं मपीभय॥
६दि॥ ॐ धर्माय॥ **दक्षगल**॥ ॐ ज्ञानाय॥ **वामगल**॥ ॐ वेनाका
य॥ ॐ ज्ञेयार्थाय॥ **नामान**॥ ॐ अधर्माय॥ **वद**॥ ॐ अज्ञान
य॥ **वामपा**॥ ॐ अवेनाकाय॥ **नाहि**॥ ॐ अनेयार्थाय॥
दक्षिपा॥ ॐ अनन्ताय॥ ॐ कन्दाय॥ ॐ भालाय॥ ॐ क
लनाय॥ ॐ प्रणाय॥ ॐ कर्तुकाय॥ **६दि॥ तत्पद्म**॥

ॐ अंसूर्यमंडलाय॥ दक्षकलात्मनः॥ ॐ उंसामसुलाय॥ प्राज
दक्षकलात्मनः॥ ॐ संवत्सराय॥ ॐ सैमनागुनाय॥ ॐ
ननङ्गागुणाय॥ ॐ गंगमागुणाय॥ ॐ अं आत्मनः॥ ॐ उं अन
न्तात्मनः॥ ॐ पंचनमात्मनः॥ ॐ क्रीं ज्ञानात्मनः॥ ॐ मां माया
तत्त्वाय॥ ॐ कं कलातत्त्वाय॥ ॐ वं विशातत्त्वाय॥ ॐ पंचनम
त्त्वाय॥ **६दि॥** ॐ विमलाय॥ ॐ आकर्षणे॥ ॐ ज्ञानाय॥

॥ॐ क्रियाये॥ॐ आगये॥ॐ प्रवृत्तये॥ॐ सत्याये॥ॐ ऋः
ॐ अ॥ॐ अनुग्रहाये॥ॐ ह॥ ॥ततो पूर्ववत्सूत्रकनषड्
व्यापकनामः॥ ॥आध्याम॥हो॥६॥६॥३॥ ॥ॐ मिदं
हमअपी॥ॐ हनुमानंदवतां॥ॐ त्वामुवाच॥ॐ मित्राभानमी
॥ॐ॥ॐ स्वागतंदवदवसन्निधौ॥ॐ व०००॥ॐ वनः॥ॐ ह॥
मानसी॥ॐ यथा॥ॐ पनिलवितां॥ ॥दिव्यदहं॥ॐ आत्मानं॥ॐ त्वाम

नसापाशादिना॥ॐ उपसमर्पणं॥ॐ त्वाम्॥ ॥ततो वाचपूजना
॥ॐ॥ॐ आ॥ॐ अ॥ॐ क॥ॐ दि॥ॐ आ॥ॐ अ॥ॐ रु॥ॐ सि॥
॥पूजा॥ॐ म॥ॐ व॥ॐ क्रि॥ॐ म॥ॐ धु॥ॐ ला॥ॐ य॥ॐ द॥ॐ क॥ॐ ला॥ॐ त्म॥ॐ न॥ॐ धी॥ॐ ह॥ॐ नु॥ॐ मा॥ॐ ना॥ॐ र्ध॥ॐ पा
॥ॐ य॥ॐ ना॥ॐ य॥ॐ ॥ॐ र॥ॐ व॥ॐ सि॥॥ॐ रु॥ॐ द॥ॐ ॥ॐ व॥ॐ क॥॥ॐ स्था॥ॐ प॥ॐ नं॥॥ॐ पू॥ॐ ज॥ॐ ॐॐ अ॥ॐ स॥
॥ॐ स॥ॐ धु॥ॐ ला॥ॐ य॥ॐ द॥ॐ क॥ॐ ला॥ॐ त्म॥ॐ न॥ॐ धी॥ॐ ह॥ॐ नु॥ॐ मा॥ॐ ना॥ॐ र्ध॥ॐ पा॥ॐ य॥ॐ ना॥ॐ य॥ॐ ॥ॐ ॐॐ
॥ॐ अ॥ॐ त॥ॐ व॥ॐ ना॥ॐ य॥ॐ द॥ॐ रु॥ॐ द॥ॐ पां॥ॐ व॥ॐ ज॥ॐ न्या॥ॐ य॥ॐ ॥ॐ र॥ॐ व॥ॐ न॥ॐ हा॥ॐ य॥ॐ ॐॐ सूर्य॥ॐ म॥ॐ धु॥

लायद्यादृष्ट कलात्मनः॥ ३॥ पूजा॥ उल्लेखनपुनः॥ मूलविलासनी
 ममाङ्कवापुनः उल्लेखनपुनः॥ अथवा॥ उं श्रीं वन्द्या देव्यै॥ ॥ पू
 जा॥ उं उं सा म मेव लायद्यादृष्ट कलात्मनः श्रीहनुमाना द्यो मृताय
 ॥ ४॥ विमृष्टा मनीषा वा हने॥ उं गरुड वज्रमृग वं वं वं वं वं वं वं वं
 नृमृष्टा॥ मूलनः॥ ६॥ अं गनपूजा॥ उं वन्द्या द्यो मृताय
 रस्यमृष्टानः॥ रधनः वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं वं
 द्यो निका रुद्र॥ ४॥ इति श्रीगुह्ये॥ अथवा मया यथा शक्तं कृतं

स्मानि सर्वे प्रादुशत॥ ॥ मगः पाञ्चावमः स्नानकलः मधुः ॥ ॥ म
 गार्थस्यान्तः सामान्यार्थपात्रवस्त्रापनं॥ ॥ निर्वद्यः॥ ॥ ॥
 अर्थ उल्लेखनपुनः रुद्र॥ वन्द्या द्यो मृताय॥ रधनः॥ यं ३ नं ३ वं ३ मृ
 तं ३॥ वं
 लसाधनविरमपपात्रवस्त्रापनथायाइला॥ वैष्णवइलसामुखा

लक्ष्मिसिया॥ रणे व विरहा षष्ठी कलसंस्कारपनं यथा ३ विधानना ॥
पागुस्कारपनं ॥ ॐ आधानं कक्षादित्या २ ॥ षष्ठा रण भुग्मदिका
रहा षष्ठेन पूज्या ॥ मंचि मिल रुद्र ॥ मचिभ ॥ पूजा ॥ ॐ मं वं मधु
लाय दक्ष कलात्मनः श्री हनुमान् पाता सनाय २ ॥ म हा र्ग ख सि ल
रुद्र धकं ॥ ३ ॥ मूलं धूप स्कार मथ ॥ ॐ मूलं श्री हनुमान् पातं स्कार

दि ३

पयामि २ ॥ पूजा ॥ ॐ ॐ सूर्य मधुलाय दक्ष कलात्मनः श्री हनु
मान् पाताय २ ॥ ती र्थ उत्तर पूनर्ध ॥ मूलं ला मचि ला म मा रू का प
नः श्री हनुमान् दक्षा पातं पूनयामि २ ॥ ॐ व क्ता भु खं उ रू भ ति
॥ पूजा ॥ ॐ ॐ सा म मधुलाय दक्ष कलात्मनः श्री हनुमान् पाता
मृताय २ ॥ पं वां कृ षा न ॥ ॐ लूं लूं लूं लूं लूं पश्च न ल्प ला २ ॥ वि का

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमः ॥ मूलनरणाध
नं ॥ ८ मत्स्यमूत्रा न ॥ मालगुय ३ दिग्बन्धनं रुद्र ॥ ॐ ठिका रुद्र ॥ १५
नूवं ॥ संभा हिधः सन्निभूधः महा मूत्राः अनिमूत्रा ॥ मूलमन्त्रन
प्रियाकुलि ॥ नमस्कान ॥ ४० मिमूलपात्रकूपनं ॥ ॥ ततागुनपात्र
हागपात्रवलिपात्रवीनपात्राणि निर्यवत्वा सामान्याद्यपात्रवत्क
पनं ॥ ॥ गुनपात्रगुनमर्पणं ॥ ॥ तता अर्कयोगः ॥ ५० नूत्रन

सतिमनिपल्लव्यां नया दधुसविज्जावकावमननं पूजाया यपं
आपवानधः धवसिनसुयया अलिमूलं श्रीहनूमतं ॥ ३ ॥ ॥
निभूत्रयोगः ॥ ॥ धमनं देवमानूपराज ॥ आत्मपूजा ॥ अर्चा
मैखयालं खनधमठिनसहाय ॥ गायत्री न ॥ मूलं आत्मन वन्दनं
नवं भूतपूज्यं च ॥ सिनसुप्रियाकुलि ॥ मूलं आत्मन ॥ ३ ॥ ॥
चटकूपनमाससाधन ॥ ॥ मालिनिबानधूपधन ॥ विघ्नवलि ॥ ॐ

दशरथासर्वविघ्नहर्त्रः वलिंगुक्तस्वाहा ॥ पंचवल्लि ॥ तता
तर्प्येष्टं ॥ शगपायनपनिधान ॥ मूलपण्डितमूलतर्प्येष्टं ॥ ताम्बू
लादिमुखलक्षणधनं ॥ भातनिर्गुण ॥ चतुसंस्कारादिस्त्रापनं पू
जा ॥ देवावाहनं ॥ श्रीसूक्त ॥ मूलं हंसधुलं आगच्छस्वाहा
॥ विवल्लि ॥ वृत्तिलोवविष्णुपञ्चायाइत्या ॥ वैष्णवश्लो

वैष्णवश्लोकाः विवल्लि पंचवल्लिमन्त्रविष्णुपञ्चायाइत्या ॥ अन्तर्गणनस्यं
दाहलपेश्लो ॥ ततापूजादिस्त्रापनं ॥ लेखनहायरुद्र
चन्दनाक्षरमे ॥ लक्षणधनः यैत्रं नैत्रं वैत्रं मूलं ॥ तान्त्रयत्रदिस्त्राप
नं ॥ लक्षणमूला ॥ ततागुनूपकिपूजा ॥ ॐ नैगुनूथानमः ॥ ॐ
नैपनमगुनूथानमः ॥ ॐ नैपनापनगुनूथानमः ॥ ॐ नैपमष्टीगुनूथानमः
ॐ नैदिगीद्यगुनूथानमः ॥ ॐ सिद्धोद्यगुनूथानमः ॥ ॐ नैमानवीद्यगु

नूलाशा उं नूगुनूठकिश्या २॥ ॥ गगादवासनं पूउथगा ॥ उं आ
 धनमकथ २॥ उं मधुकाय २॥ उं कालाग्निनूदाय २॥ उं कक
 प्राय २॥ उं अनकाय २॥ उं पृथिवी २॥ उं अमृतसागनाय २॥
 उं उं नलदीपाय २॥ उं कल्पवृक्षाय २॥ उं महिर्वेदिकाय २॥
 उं हंसपीथय २॥ उं धर्माय २॥ उं ज्ञानाय २॥ उं वेनाज्ञाय २॥
 उं नैष्ठिक्याय २॥ उं अधर्माय २॥ उं अज्ञानाय २॥ ॐ अनाज्ञा

उं प्रकृत्यात्मकपद्माय २॥ १५३
 य २॥ उं अनैष्ठिक्याय २॥ उं पंचविधगतिरत्वात्मकपद २॥ उं
 आनन्दकक्षाय २॥ उं अविज्ञानाय २॥ उं विकानमयकक्षना
 य २॥ उं पञ्चशतद्वर्षीजाय कर्णिकाय २॥ उं अंसूर्यमधु
 लाय कंठतपिन्यादि द्वादशकलात्मनः २॥ उं उं साममधुला
 य अं अमृतादिषाडशकलात्मनः २॥ उं मं अग्निमधुलाय यैव
 सार्विषादिदशकलात्मनः २॥ उं उं अनन्तनात्मनः २॥ उं मं प
 १५५ उं संसत्वाय २॥ नैनो गुणाय नैन

नैनो गुणाय नैनो गुणाय नैनो गुणाय नैनो गुणाय

नमात्मनः॥ॐ क्रीं क्लानात्मनः॥ॐ मां मायागत्वाय॥ॐ कैं
कलागत्वाय॥ॐ विं विद्यागत्वाय॥ॐ पैपनमगत्वाय॥
नरः प्री॥ॐ किपूजा॥ॐ विमलाय॥ॐ आकर्षिह्ये॥ॐ क्ल
नाय॥ॐ क्रियाय॥ॐ आगमय॥ॐ प्रदे॥ॐ सखाय॥
ॐ वृक्षाय नमः॥ॐ अनुग्रहाय॥॥ॐ पर्वतयो॥ॐ प
द्माय॥ॐ आसनाय॥॥ॐ गंगाया ध्यायामन्मः॥॥ॐ

ना॥ॐ वालार्कायुतग॥ॐ संग्रिहवनप्रक्षाएवं सुंदनं॥ॐ वादि
समस्तवानेन गनेनानाधिरंसां उलि॥ॐ नादनं वसुमस्तनादसम
ध्यान्मंशासयनप्रभुं श्रीमदामपदाम्बुं स्मृतिनं ध्यायामि
वातात्म॥ॐ ध्यानपूष्य॥॥ॐ कृतापूरुलि॥ॐ देवधरकिस्तन
एपनिवानसमन्विता॥ॐ आवत्वं पूजयिष्यामि तावत्वं सुखिभा
एव॥॥ॐ गंगावाहने॥ॐ मूले एगवन् श्री हनुमान् देववृं

हागच्छ २००० हनिष्ठ २००० हसनि नूछाएव २००० हसनि हिगाएव
 अग्राधिष्ठानं कनूरमम पूजा गृहाए २००० ॥ आत्मसंस्त
 ति ॥ ॥ गगः प्राधप्रतिष्ठा ॥ ॐ श्रीं क्रीं क्रीं यै नै लै वै भै प्रै सै हां ॐ
 कै सै हं सः श्री हनुमान् देव स्प प्रा धा ०० ह प्रा धाः श्री हनुमान् देव
 स्प जी व ०० हनिष्ठ हनुमान् देव स्प स वै दिव्या धिना ज्ञा एव
 इ ॥ श्री प्रा धा प्रा धा ०० हागय सुखं विनं रिष्ठ नु स्वाहा ३ ॥



पूर्ववदेवस्मार्तप्रणामः॥ मूलमन्त्रः॥ अलक्षितः॥ ॥ ह्रीं नमः ॥
वानदयात्॥ ॥ ह्रीं नमः॥ पूजा॥ मूलं श्री हनुमान् नंदवत्स्वामिः
कुशलमिदं मासनमास्पताम्॥ ॥ आसनं॥ पूजा॥ मूलं श्री हनु
मं गायत्र्युदमासनं॥ ॥ पाद्यं॥ मूलं श्री हनुमं गाय पाद्यं॥ ॥ अ
र्घ्यं॥ मूलं श्री हनुमं गायत्र्युदमर्घ्यं गृहाण स्वाहा॥ ॥ आचमनं॥
मूलंः उदमाचमनीयं श्री हनुमं गाय स्वधा॥ ॥ मधुपर्कं॥ मूलं

उदमधुपर्कं हनुमं गाय स्वधा॥ ॥ पूननाचमनं॥ मूलंः पूननाच
मनीयं श्री हनुमं गाय स्वधा॥ ॥ स्नानकलशं॥ मूलंः उदं स्नानीयं
श्री हनुमं गाय॥ ॥ पदवस्त्रं॥ मूलंः उदं पदवस्त्रं श्री हनुमं गाय
समर्पयामि॥ ॥ गन्धचन्दनं॥ मूलंः उदं गन्धचन्दनं श्री हनु
मं गाय॥ ॥ सिद्धं॥ मूलंः उदं सिद्धं श्री हनुमं गाय॥ ॥ अ
लपनं श्री हनुमं गाय॥ ॥ अक्षयं॥ मूलंः उदं अक्षयं श्री हनुमं गाय॥

॥ यद्वा पवीतं ॥ मूलं ॐ दयद्वा पवीतं श्री हनूमतायः
कालं ॥ मूलं ॐ दं मलं कालं हनूमताय ॥ ५ पुष्पं मूलं ॐ दं पुष्पं
श्री हनूमताय ॥ ॥ एवं माला पुष्पं ॥ नाना उति माला पुष्पं ॥ ॥
धूपं ॥ घृष्ट पुष्पं ॥ ॐ गऊर्धनि मनुमाग स्वाहा ॥ पुष्पं ॥ ॥ मूलं
ॐ दं धूपं श्री हनूमताय ॥ दीपं ॥ मूलं ॐ दं दीपं श्री हनूमता
य ॥ ॥ नैवेद्यं ॥ मूलं ॐ दं नैवेद्यं श्री हनूमताय निवेद्यमि ॥

॥ निष्ठा वत्स धनया वन ॥ प्राध्याजनी ॥ ॐ प्राध्याय १० ॥ ॐ पानाय
१० ॥ ॐ व्यानाय स्वाहा ॥ ॐ उदानाय १० ॥ ॐ समानाय १० ॥ ॥
मूल प्राणामृतं ॥ ॐ अमृतमिधानमसि ॥ ॥ पुनरावमनीयं
॥ ॐ पुनरावमनीयं स्वध ॥ ॥ किंदाः नुः नाना रूल मूलः पक्का
नः इदं रूलः सियाः सायाः रुक्म ॥ ॐ वामनं ॥ मूलं ॐ दं
चुपं श्री हनूमताय ॥ ॥ वामनं ॥ मूलं श्री हनूमता ॥

सं२

यसनभयनादभाहविधंसनञ्जुजिह्वकानक्षीतानद्वय
 कनाक्षसीधविदानधकृष्कधुदिवधपनायधुनीनानल
 किंरत्यनसमूदध्यामद्रूमलंघनमाहासामर्थमहाभजःपं
 उविनाउमानस्वामिवचनसम्प्रादिताईनसंयुगसहायक
 मानवृक्षचानितुगंरीनदयदक्षिणमार्गधुभनूपर्वतपीठ
 कार्वनसकलनक्रोगमाचार्यममसर्वग्रहविनासेनसर्वकृत्

वागन सर्वविष विना सैन सर्वा पदि निवान ध सर्व दुष्ट निव
 ह द्य सर्व व्याघ्रादि भय निवान ध सर्व भक्षक दन म म पत्र स्य
 न विभुवन पंक्ति न पं स कात्मकं सर्व जीव जातं व धाय २ समाह्वा
 कानकं संपादय २ नानाना म र्धयान् सर्व नायकः स प निवा न
 न्म म स व कान् क न २ सर्व भद्रा म् विष्वाक्षि विष्वं संय २
 जी दु ह ३ प्र चो हि २ श्री श्री श्री श्री श्री सर्व भद्र न

नवलानिपत्रसेत्पानिष्कारय २ मम सर्वकार्यजातं साधय २ स
र्वदुष्टदुर्जनमूर्खानि कीलय २ ध्य ३ हा ३ हूं ३ रुद्र स्वाहा ॥ शु
हनूम नमः पाप ॥ ३ ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ ॥ गतो आवर्धु पूजा ॥ ॐ
स्फोरंगवगुणी हनुमान्पनिवानाक्षः पूजयामि आकांक्षिहि
नमानमः ॥ ॥ पनिवाने ॥ नगदीक्षु नमः ॥ ॥ नमः ॥

दलारघपूजा॥ॐ नमस्कृत्य २॥ॐ महामाताय २॥ॐ कपि
नामाय २॥ॐ महाबलाय २॥ॐ द्वाष्टादिहनाय २॥ॐ भद्रपी
थाय २॥ॐ दक्षिणाक्षरास्त्रनाथ २॥ॐ सर्वविघ्ननिवानक्ष
नाय २॥ ॥दलारघ॥ॐ सुग्रीवाय २॥ॐ मंगदाय २॥ॐ नी
लाय २॥ॐ जाम्बवन्ताय २॥ॐ नलाय २॥ॐ सुखनोय २॥ॐ द्विदिदाय
ॐ मेदाय २॥ ॥दपन॥ॐ लूंळूंदाय २॥ॐ नूंअग्नय २॥ॐ रूंयथा

य२॥ ॐ कूं ने अत य२॥ ॐ वूं वनूदाय२॥ ॐ यूं वायव२॥ ॐ सूक्वे
य२॥ ॐ कूं वूं नानाय२॥ ॐ अूं अूं य२॥ ॐ उूं उूं य२॥ ॥ ग
ही॥ ॐ वूं वूं य२॥ ॐ अूं अूं य२॥ ॐ दूं दूं य२॥ ॐ पूं पा
य२॥ ॐ धूं धूं य२॥ ॐ गूं गूं य२॥ ॐ गिं गिं य२॥ ॐ वूं
चकाय२॥ ॐ कूं कूं मधुल२॥ ॐ निपनिवानपूजा॥ ॥ तना
पाभननविष्णुपूजा॥ न्यासः॥ ॐ अूं स्प पं वा दनमनुस्य

धीनामचन्द्रचपय२॥ सिना॥ ॐ गयत्री चन्दस२॥ म२॥ ॐ
हनुमानद्वजगाय२॥ ददि॥ ॐ सर्वतु सर्वदा सर्वार्थसर्वसि
च्चर्थउपविनित्यागः॥ कतां उति॥ ॥ न्यासः॥ ॐ कूं ह
नूमनः अं गु॥ ॐ खूं नामदुतायः नकु॥ ॐ कूं लक्ष्मि
प्राप्तदायः मधुमा ॥ ॐ कूं अं अं नीसगायः अना॥ ॐ कूं
सीतासाकविनासायः कनि ॥ ॐ कूं अं अं अं अं अं

श्रीलंकाप्रसादरंजनायः कनकल ॥ नवद्वयदयादि ॥ ॥ श्री
 सनपूजा ॥ ॐ पद्मासनाय ॥ ॥ ध्यानं ॥ ॐ वालायुगभजसमि
 ॥ ॥ आवाहनादिपाद्यादि ॥ ॥ विद्यापुलि ॥ श्रीं श्रीं श्रीं श्रीं
 श्रीं ॥ श्रीं हनुमताय नमः ॥ ३ ॥ मूला ॥ आवर्णपूजा ॥ दिप
 आगपूर्वव ॥ ॥ निपन्नदनी ॥ ॥ गतां पावननवादय

卷二

कनीन पूजा ॥ क्रष्णादिध्यान पूजा पूर्ववत् ॥ गथाशुलिः ॥ ॐ
 नैथीं कौं कौं कूँ कूँ खूं कूँ कूँ कौं ॥ श्री हने मगपा पू ॥ ३ ॥
 आवर्धु पूजादि ॥ प्रथा ॥ ग पूर्ववत् ॥ ॥ ॥ अथ विलम्ब
 पर्व पू व मन भूषा दक्षा कन ॥ न्यासः ॥ ॐ ऐं ह्रीं क्लीं दक्षा कन
 मन्त्र स्मृत् ॥ ध्वन क्र पिय ॥ सिन ॥ ॐ अनू ह्र पु न्य सी ॥ न

ॐ श्री हनुमान दवगायत्रा ॥ इति ॥ ॐ हं वीज यत्रा ॥ लिं गे ॥ ॐ स्वाहा
अकथ्य ॥ पोद्यो ॥ ॐ सर्वत्र सर्वदा सर्वसिद्धय ऊष विनिशो
गः ॥ इति गायत्रिः ॥ ॥ नमः ॥ ॐ आं ऊं नमो यः ॥ ॐ नमो मूर्त्य
न ॥ ॐ वायुपूजायः नमः ॥ ॐ अग्निगर्हायः नमः ॥ ॐ नामदूग
यः कः ॥ ॐ वृक्षामु विनिवान्नायः कः नमः ॥ चवं ददयादि ॥
गगा आसन पूजा पूर्ववत् ॥ ॥ ध्यानं ॥ ॐ दहनग प्रसूवर्षु सम

प्रभं भयहनं ददय विहितां कुलिं ॥ शुवध कृष्ण लक्ष्मि मूर
खां वृं ॥ नमगवानना ऊमहाकुने ॥ ध्यान पूषं ॥ ॥ आवा
हनादि पाद्यादि प्रिया कुलिं ॥ नमो गवगं आं ऊं नमो यम
हावलाय स्वाहा ॥ श्री हनुमग पापू ॥ ॥ आवर्ष पूजा पूर्व
वत् ॥ प्रयोग विष्णु श्रुतौ ॥ ॥ ततः प्राभनन श्री हनो गना सक
मर्तु ॥ नमो ध्यान पूर्ववत् पूवव ॥ प्रियां कुलिं ॥ आया हनु

मंगरुलरुलीनधगधगीनआयनाषपनूदाह॥ श्रीहनुमगपा
पू३॥ प्रथागविष्णुस्तु॥ ॥ गताइष्टाहुवमनुष्यपूजा॥ नर
प्रादिन्यासध्यानभावर्धुपूजापूर्वव॥ प्रियांउलि॥ ॐ क्रां
कीं कूं कौं क्रीं कः ॐ ॥ श्रीहनुमगपापू॥ ३॥ ॥ अक्षरमाला
॥ ॐ वं क्रा का य व प्र तु धु क पिल पिं ग ल तु र्दु क ष म हा व द न क मू र व त
ठि डि क्रीं द द द्वा क्क ट क ह र क ना लि भ म हा द ध प्र हा नू लं कं व न

वधायमहासतुवन्धमहासेलप्रवाहगगनचननृक्षहिएगवन्म
हावलपनाक्रमएनवाङ्गापयनृक्षहिमहाभोददीर्घपूऊनव
ष्टयवेनिर्धंरंऊय२हुंरुट्॥ श्रीहनुमगपापू॥ ३॥ न्यासध्या
नपूर्वव॥ पूर्ववन्प्रथागस्तु॥ ॥ ॐ निमनुमहादध्रूकं॥
गुंभकपाभननविष्णुपूजा॥ ॥ गतामालापंचादनमा
मनुष्यपूजा॥ न्यासः॥ ॥ आवाहनादिपाशादि॥ ध्यानं॥ ॐ

ध्यायद्वालदिकाकनश्रुतिनिरंशवानिदर्पापहं देवन्दप्रमूर
प्रभक्तुयभसंदवीप्पमानंनृचा॥सूग्रीवादिसमस्तवाननयूत
व्यक्तगत्वप्रियंसंनक्तानूधलावनंभवनउंपीगांवनालंछनम॥
ध्यानपूष्यं२॥॥आवाहनादिपाशादि॥गियांउलि॥होमंइं
खुंको॥शीहनूमनपाप॥३॥॥उंउंशींक्रांकींकूंमुंखुंकोंकोनं
भाहनूमनममपनस्यकृष्णगधुमालाभूटक
लैंउकाहिकघाहिकशाहिकबागुथिकपंचाहिकसगगदा

नसानिपातिकवनरुगवनमंगुवनधूलरगंदनमृगकुक्कु
पालधूलकर्धुधूलादिधूलउदनधूलहस्तधूलपादधूलगुल्मा
दीनसर्वव्याधीन्क्षयनरिन्धि२किन्धि२नाभय२निष्कन
य२कंदय२महावीरहनूमान्हां२कूं२धूं२जी२कूं२रु
खाहा॥ श्रीहनूमनपाप॥ ॥ पूननपिमाला॥ ॐ नैषीं जां कीं
कूंमुंखूंभूंनंभाहनूमनमहावलपनाक्रमममपनधूल

प्रगपिष्ठाचष्ठाकिनीजकिनीयकृष्णीपूतनामानीकृत्वायदनादसरे
नववंगालग्रहवृक्षनादसादिकजातवृत्तवाधंकरुधनहनररुद्र
रविनासयरवानयरवन्धयरनूदरसूदरधूनरभावयरमान
दरमहामाहर्षवननूद्रावगान. हांरहंरधंररुद्रस्वाहा॥ श्रीहनुमन्
पाप॥ ३॥ धरधंविष्ठाषमालादवानंपूजा॥ ॐ निषंवाकनी॥ ०॥
अथशंभननमालामर्तुनपूजा॥ न्यासः॥ ॐ अस्महनुमान्माला

मनुस्य॥ वधाशुलि॥ ॐ नामचन्द्रचरषथ॥ शिना॥ ॐ अनूदुष्ट
न्दम॥ २॥ मूख॥ श्रीहनुमान्देवगाय॥ ६॥ ॐ मानूगात्मज
निवीजाय॥ गुह्य॥ ॐ अशुनीसूनिनिभकथ॥ पाथो॥ ॐ वा
यूप्रगुह्यनिकीलकाय॥ २॥ सर्वा॥ ममसकलकार्यसाधनवि
नीयागः॥ १॥ लंगा॥ ॥ न्यासः॥ ॐ नभाएगवमअशुभयायः
॥ ॐ नूदमूर्त्यः॥ ॥ ॐ वायूप्रगायः॥ ॥ ॐ अग्निगर्हयः॥ अना

॥ ॐ नमो भूतायः क ॥ ॐ बुद्धा मुनिवानदभयः कनकल ॥ नवें दय
आदि ॥ ॥ आसनं ॥ ॐ पद्मासनाय २ ॥ ॐ नमः ॥ ॐ वाभिकनवे नि
विठं वहनं ॥ ॐ लं पनं ॥ कन हो नि ट कं ॥ गथ स मा कृ कृ सु व हु
वर्धु ॥ ए अ नू ल कृ धु ल मां ऊ न यं ॥ ध्यान पू ष्यं २ ॥ ॥ आवाहन
दि पा आ दि च न्द ना दि ॥ प्रिया पू र्ति ॥ ॐ न मा ए ग व र ह न म ड
जा य प्र क ट वि क्र म क्रा न्त स क ल दि क्क म धु ल य ॥ आवि गान

धवली कन ऊ ग मि ग या य व ड्द ह नू डा व गान लं का पू नी द ह
ना दी प न उ द धि व न्ध न दा भ भि न कृ ता न्त क सी ता स मा ष्ठा स न
ॐ ऊ ना ग र् संह रा श्री ना म ल क्क ना नं द क न क प्रि से न्य प्र का न
सू ग्री व सा धन ध प र्व ता त्या ग न कू मा न वृ क्त वा नी नू ग म्ही न
स्व न स र्व ग्र ह वि ना स न ॐ जी हं हं हं प्र कृ ष्ट वि षं ह न २ प न व लं
को र य २ स र्व का र्थो ऽ षि सा ध य २ हू रू द्वा हा ॥ श्री नृ म न

पाप॥३॥प्रथागविष्णुपा॥ ॥ॐ नमो भगवते हनुमन्महादेवाय महावीर्य
यपनाकमाय वृषांगाय कपिलकेशाय नकुलनाय सूर्यैरक्षय
यभूषणकवनरंजनाय भुजंगनाय संभूताय भूनाय रसधर्मला
कापिगताहपात्रपिगताविकलांतगुलिनवन्धय रभूटय र
क्रां क्रौं दूं रुद्र स्वाहा ॥ श्री हनुमन्महादेवाय ॥ ॥ॐ नमो भगवते
हनुमन्महादेवाय प्रटिष्ठेति नमः कृदनाय नमः गगनवक्रपंक्त

नाय सर्वकार्योद्दिभिः साधय दूं रुद्र स्वाहा ॥ श्री हनुमन्महादेवाय
पाप॥३॥ ॥ निमन्तु ॥ ॥ ॥ पूनपूजा ॥ गृथापूरति ॥ ॐ क्रौं
हनुमन्महादेवाय नमः ॥ श्री हनुमन्महादेवाय ॥ ३ ॥ माला मन्त्र नमः ॥
ॐ वडसूदहकपिलपिंगल उर्ध्वकेश महावलनकमुख
गठिक्कि कामहानी ५५ द्वा ल्केट केहर केनालिभ महादेव

ॐ भद्राद्यानां श्रीहनुमन्पापू॥३॥ ॥ मूलनिर्य
रतिः॥ होँ कुँ खेँ क्लौँ कुँ हनुमन्नमः॥ श्रीहनुमन्
पापू॥३॥ ॥ निविन्दूपजा॥ ॥
तमाहनुर्नवपूजामालकायायइल॥ ॥ मालकोपु
आथनयाय॥ ॥ ओवइलसावलिपूर्ववत्सालमूलनवी

वीयशला॥वेपुवशरसामुम्वालशरःपुष्पाकर्मइसायधकर्म
यानाववलिवियशला॥ ॥गमाभूलनवाःमूलश्राकनवाःव
दनवापायादिनानापवापुषुजयित्वाहममावन॥सुधित
उग्निमुपाधायवेधदवक्रियावन॥सुधितःमूलनवीकनं॥
ॐ ह्रीं अम्नायरुद्रः सामान्यार्थकलनकुरानप्रादनःगाउनं
कुरा॥ॐ ह्रीं कवचाय ह्रीं कुराजलनाग्निं स्थापय॥

कुराभुमधुलंलिखित्वापूजय॥ॐ ह्रीं मधुकादिस्था॥ॐ ह्रीं
जयाद्यष्टककथनमः॥ॐ ह्रीं वागीशी वागीधनयार्थागपी
भस्मननमः॥ ॥ॐ ह्रीं निगिमकुहागन्धादिनापूजय॥
॥ ॥गमाउग्निस्थापनं॥ॐ ह्रीं अम्नायरुद्रः अग्निमानी
य॥ॐ ह्रीं कवचाय ह्रीं उक्तादय॥ॐ ह्रीं अम्नायरु

शानेऽग्न्यकारहक्वाद्याग्निं श्यञ्जामूलनाग्निं पूजयन्
मूलनवीरुनादिपूर्ववज्जगत्संस्क्रान्तं कृत्वा नमस्तुते पूज्य
॥ ॐ ३८ ॥ धनं ॥ वैः धनमूढा ॥ रुद्र ३ ता सगयः रुद्र संन
रु ॥ हूं हूं भूवगूढनं ॥ ॥ गगः कुंरुधपनिभूनिप्रामथ
॥ ॐ ३१ ॥ ॥ मूलः हूं वक्रि चैतन्यायनमः ॥ थवदासाच

कंदोया ॥ ॥ गगोद्वालिनी मूढा ॥ ॥ गगोन्मासः ॥ अस्मद्व
धननमस्तुते ॥ हंतां उलि ॥ ॐ एगुन्नृषयः ॥ शिन ॥ ॐ ग
यग्रीकृन्धसनमः ॥ मूर्ख ॥ ॐ पावकादिवगायनमः ॥ क
दि ॥ ॐ नं वीजाय ॥ गुह्य ॥ स्वाहा भक्तयः ॥ पादो ॥ ॐ हव
न विनीयागः ॥ नमस्कानं ॥ ॥ न्यासः ॥ ॐ सहजा विरवः ॥

शुक्लाख्यानमः॥ ॥ॐ स्वस्ति पूरुषायः गर्जनीयां वरु॥ ॥ॐ उक्ति
ष्टपुन्रपायः मध्यमायां वषट्॥ ॥ॐ धूमव्यापिनः अनामि
कायां हूं॥ ॥ॐ सप्तजिह्वायः कनिष्ठायां वीषट्॥ ॥ॐ ध
नूर्धनायः कनकनपृष्ठायां अस्त्राय रुट्॥ ॥ॐ सहस्रार्चि
श्वः हृदयाय नमः॥ ॐ स्वस्ति पूरुषायः शिनस स्वाहा॥ ॐ उ

क्तिष्टपुन्रपायः शिखाय वषट्॥ ॐ धूमव्यापिनः कवचाय हूं॥
ॐ सप्तजिह्वायः भृगुगुयाय वीषट्॥ ॐ धनूर्धनायः अस्त्राय
रुट्॥ ॥ नमो इत्युक्तं॥ ॐ आध्यात्मिकादि॥ ॐ नैव क्रिमधु
लाय २॥ ॐ प्रीताद्यष्टाकथनमः॥ ॐ नैव क्कासनाय नमः॥
ध्यानं॥ ॐ शिभगुमानकतनूं सुगुलूं वसुं सुवर्धुमु उमग्नि

मी३॥ वनाएयस्वस्तिकमकिहसं पद्मसुमाकल्पसमूहयू
कम॥ ॐ नमः पूष्यं २॥ ॥ आवाहनादिमूलन॥ ॐ अग्नय पा
नमः ॐ व्यादिनाभापचानं उपदा पथ ॥ गयो जलि ॥ ॐ व
धनन जागव दं हवला हिताद सर्वकर्माधि साधय स्वा
हा ॥ अग्नय ग आ र हान काय पाप ॥ ३॥ ॐ नं अग्नय पाप

मू३॥ ॥ खड्गं न पूष्य ॥ ॥ पनिवान ॥ नं अग्नय सारक्ष्यः स
गन पनिवानि रय पाप ॥ आवाहनादिचन्दना कृत पूष्यं नमः ॥
चुगल ॥ धनथन याना व अग्निमूलन हा मः षड् अः पनिवान
यानं हा मः ॥ ॥ तथा मूलदवाग्नयान व विराव्य ॥ ॥ तथा
मूलदव नूपाग्निं पूष्य ॥ मूलन न्यासः ॥ दं वासनं ॥ आवाहना

संख्यानि २५ श्रुत्याग ॥ गगः प्रथा गद्वेन संख्या प्रमानन श्रुत्याग ॥ गगः पवित्रा नखैः श्रुत्याग ॥ पुनव्या ह रिना श्रुत्याग ॥ ॐ पुर्व्वुवः स्वः ॥ १॥ ३॥ ॥ चन्द्रनादिना ना पचानं श्रुत्याग ॥ उपस्तानं ॥ ॥ देवयाकं अग्निहीनथाय ॥ अग्निविमर्जनं ॥ गाययः लाथुगः संज्ञानमुद्रान अग्निघायः स्थानकया वदव

याकनः गऊदकादवमुखलीनयाय॥ पूननाचमनं मूलन
वा॥ केनवादवस्यामृश्ववद्यात॥ अनिदवस्यवकुली
नंरावथ॥ मखादिनेवशादिनीउडीरुभोऊनेचिनिव
दथन॥ ॐ वैवहृध्वनाय॥ ३॥ ॥ विनिहामः॥ ॥

[illegible]

Handwritten text in a script, likely Indic, on the upper half of the manuscript page. The text is arranged in approximately five horizontal lines. The script is dark and appears to be a form of Devanagari or a related Indic script. The paper is aged and shows signs of wear, including creases and discoloration.

Handwritten text in a script, likely Indic, on the lower half of the manuscript page. The text is arranged in approximately five horizontal lines. The script is dark and appears to be a form of Devanagari or a related Indic script. The paper is aged and shows signs of wear, including creases and discoloration.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written in dark ink on aged, yellowed paper. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The first line is partially obscured by a fold in the paper.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written in dark ink on aged, yellowed paper. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in several lines, with some words appearing to be repeated or emphasized.

